आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:11/03/2023; Accepted:16/03/2023; Reviewed: 21/03/2023; Published:24/03/2023

आधुनिक भारतीय उपन्यासों में - भीष्म प्रतिज्ञा – वृत्तांत

- डॉ. एम्. रजनी
तिरुपति

डॉ. एम्. रजनी, **आधुनिक भारतीय उपन्यासों में - भीष्म प्रतिज्ञा - वृत्तांत** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड3/अंक 2/मार्च 2023, (185-189)

देवव्रत गांगेय की भीषण प्रतिज्ञा का वृत्तांत 'महाभारत' में यों दिया गया हैः-

देवी गंगा के द्वारा समस्त शस्त्र-शास्त्र-विशारद पुत्र देवव्रत गांगेय को सौंपे जाने पर सम्राट शांतनु अत्यंत हर्षित हो जाते हैं और पौरवजनों की सह मति से उसे युवराज पद पर अभिषिक्त करते हैं। चार साल आनंद से गुजर जाते हैं। पश्चात् एकदिन राजा शांतनु यमुना के निकट वर्ती वन में विचरते हुए एक अवर्णनीय एवं परम उत्तम सुगंध का अनुभव करते हैं। सुगंध के उद्गम स्थान की खोज में घूमते घूमते वे एक धीरवर कन्या को देखलेते हैं जो देवांगनाओं के समान रूपवती थी। राजा के प्रश्न के उत्तर में वह बताती है कि वह एक निषाद कन्या है और अपने पिता की आज्ञा से धर्माधी नाव चलाती है। उसके सौंदर्य पर मोहित राजा शांतनु उसे पत्नी के रूप में प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरित हो उसके पिता के पास पहुँच अपने मन की बात उस पर प्रकट करते हैं। शांतनु के मन की बात को जान निषादराज इस शर्त पर अपनी कन्या को उन की सेवा में देने की बात कहता है कि शांतनु के पश्चात् उस कन्या के गर्भ से उत्पन्न होनेवाले बालक को ही राजसिंहासन पर अभिषिक्त किया जाएगा। शांतनु का मन यह वर देने के लिए तैयार नहीं होता। वे चुपचाप वापस राजधानी लौटते हैं।

शांतनु वापस लौट तो आते हैं पर उनका मन कामाग्नि की ज्वाला में जल रहा था। इसी चिंता में डूब कर वे रोगग्रस्त की भाँति खाट पकडलेते हैं। पुत्र गांगेय के कारण पूछने पर वे बताते हैं कि वे पुनः व्यर्थ विवाह करना नहीं चाहते, किंतु वंश परंपरा के लोप के भय से उन्हे पुनः पत्नी की कामना हुई है। धर्मवादी विद्वान कहते है कि एक पुत्र का होना संतान हीनता के ही बराबर है। शांतनु की बातों पर विचार करते हुए देवव्रत गांगेय पिता के हितैषी वृद्ध मंत्री के पास जाता है। और पिता के दुःख का वास्तविक कारण जानना चाहता है। वृद्ध मंत्री से मालूम हो जाता है कि सम्राट एक कन्या में अनुरक्त हो गये हैं। पश्चात् सम्राट के सारथी से गांगेय को पूरा समाचार मिल जाता है। समाचार जान कर गांगेय मंत्र, सारथी आदि के साथ निषादराज के यहाँ पहुँच जाता है और अपने पिता के लिए कन्या की याचना करता है। व्यवहार कुशल निषादराज गांगेय का समुचित सम्मान कर

गांगेय के साथ आये हुए क्षत्रियों की मण्डल के मध्य अपनी शर्त इन शब्दों में प्रकट करता है " "याचकों" में श्रेष्ठ राजकुमार ! इस कन्या को देन में मैं ने राज्य को ही रखा है। इस के गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न हो, वही पिता के बाद राजा होगा“ 'पिता के मनोरथ को पूर्ण करने की अभिलाषा से प्रेरित देवव्रत गांगेय तुरंत शर्त को स्वीकार करते हुए सबके सम्मुख वचन देता है कि सब कुछ उसकी इच्छा के अनुरूप ही होगा और सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न होनेवाला पुत्र ही उन सबका सम्राट बनेगा।

गांगेय के मुख से इस बात को सुनकर भी चतुर दाशराज आगे कहता है कि उसे उनके विषय में तो कोई संदेह नहीं है मगर उन का जो पुत्र उत्पन्न होगा, वह उस प्रतिज्ञा पर दृढ रहें, यह जरूरी नहीं है और यही उसके मन का बड़ा भारी संशय है। निषादराज के अभिप्राय को समझकर सत्यधर्म में तत्पर रहनेवाला कुमार देवव्रत अपने पिता का प्रिय करने की इच्छा से प्रेरित हो यह कठोर प्रतिज्ञा कर बैठता है- "जो जो ऋषि, देवता एवं अंतरिक्ष के प्राणी यहाँ , हो वे सभी सुनों निषादराज ! आज से मेरा आजीवन अखंड ब्रह्मचर्यव्रत चलता रहेगा।.... मैंने जन्म से ले कर अब तक कोई झूठ बात नहीं कहीं है। जब तक मेरे इस शरीर में प्राण रहेंगे, तब तक में संतान उत्पन्न नहीं करूँगा।... मैं राज्य तथा मैथुन का सर्वथा परित्याग करूँगा और ऊर्ध्वरतो (नैष्टिक ब्रह्मचारी) होकर रहूँगा।" देवव्रत की इस कठोर प्रतिज्ञा को सुनकर पृथ्वी और अंतरिक्ष के सभी निवासी कांप सा उठते हैं और देवव्रत गांगेय की जय जयकार करने लगते हैं। इसी लोकोत्तर भीषण प्रतिज्ञा के कारण देवव्रत का नाम भीष्म पड जाता है। -पश्चात् गांगेय सत्यवती को रथ पर लेकर राजधानी पहुँच जाता है और उसे महाराज शांतनु को सौंप देता है। भीष्म के द्वारा किये गये इस दृष्कर कर्म की बात सुनकर राजा शांतनु अत्यधिक संतृष्ट हो भीष्म को स्वच्छंद मृत्यु का वरदान देते हैं।

जहाँ तक कृष्णावतार का सवाल है, उसकी मुख्य कथा धारा के अंतर्गत यह प्रसंग नहीं पड़ता। इस कारण भीष्म प्रतिज्ञा का इतिवृत्त उस में विधिवत् स्थान नहीं पा सका है। हाँ, प्रसंगवश उसका उल्लेख अवश्य हुआ है। संतान उत्पन्न करने में अक्षम पाण्डु की शापग्रस्तता और तत्कारण कुरुकुल पर आये महान संकट का जिक्र करते हुए अपने कानीन पुत्र कृष्णद्वैपायन के सामने सत्यवती भीष्म की उपर्युक्त भीषण प्रतिज्ञा का उल्लेख इन शब्दों में करती है "इस में दोष मेरा ही है। जन्म - भर विवाह न करने की प्रतिज्ञा भीष्म मेरेलिए ही की थी। उसी पाप का दण्ड भगवान शंकर मुझे दे रहा है।

भैरप्पाजी के 'पर्व में गांगेय की उक्त भीषण प्रतिज्ञा का निरूपण भीष्म की स्मृति के माध्यम इस रूप में हुआ है- 'पिता ढलते आयु में दूसरे विवाह के मोहने क्यों घेरलिया ! वह भी एक मछियारिन के साथ ! उसका नाम काली था। पिता ने एकदम रोगी की भाँति बिस्तर पकड लिया था लाख सेवा करने पर भी कोई फल न निकला। अंत में पिताजी के सारथी से पूछा था उसने कहा था उस के पिताजी एक नाव चलानेवाली लड़की को देखकर उसे चाहा है। वह लडकी राजा को अपने पिता के पास ले गयी थी।

चतुरता से सारी बातों का पता लगाकर वह बोला था - 'राजा, आप का एक नवयुवक पुत्र है। आप भी मेरे जितने बूढे हैं? आप के साथ व्याह करके मेरी बेटी को क्या मिलेगा?' मिलेगा क्या? राजभवन का निवास मिलसकता है, आभरण मिलसकते हैं, सुखी जीवन मिलसकता है। पर इन सब के भुलावे में पड़कर सौत के बेटे की दासी बनने के लिए मेरी बेटी तैयार नहीं। उसके पेट से जन्मलेने वाले लडके को राजगद्दी पर बिठाने को यदि आप और आप का बेटा दोनों आप लोग जिस अग्नि की पूजा करते है, उसके सम्मुख शपथ लें तो मैं अपनी बेटी देने को तैयार हूँ। आप अभी से युवराज के पद पर है। आगे राज्य त्यागने को आप से कैसे कह पायेंगे? इस के अतिरिक्त आप के ऊपर उनका बहुत स्नेह है। पिता और माता दोनों बनकर उन्होंने आप को पाला है। देवव्रत सारथी को ले कर उस लड़की के पिता के घर गये थे। उस निषाद से देवव्रत ने कहा था- "आप की लड़की के पेट से जन्म लेनेवाला बच्चा ही हमारे राज्य का उत्तराधिकारी होगा। मैं ने सदा के लिए राज्य त्याग दिया। युवराज का पद अभी से में ने छोड़ दिया।" मैं ने यह शपथ ली थी।

निषाद ने कहा था आप ने तो कह दिया राज्य नहीं चाहिए। संसार इधर से उधर हो जाय, आप अपने वचन से टलेंगे नहीं। पर आप की संतान चुपरहेगी? आप की भी विवाह की आयु है। मेरी बेटी से बच्चे और आप के बच्चे एक साथ जवान होंगे। जब मैं ने ही मना कर दिया तो उस के लिए मेरे बच्चे कैसे हठ करेंगे ?' आज के युग में क्या बच्चे बाप की बात मानते हैं? अथवा आप के यहाँ बच्चे ही न हो तो दूसरी बात है।.. भैया, आप बड़े लोग हैं। बड़े घराने में मुझे अपनी बेटी देनी नहीं। कल आनेवाले झंझटों की भी जरूरत नहीं। आप अपने पिताजी से कह दीजिए, कहीं और लडकी खोजें। "निषाद, मैं अपने पिता के लिए प्रतिज्ञा कर रहा हूँ, सुनो। मैं सदा ब्रह्मचारी बनारहूँगा। राजा भी नहीं बनूँगा। तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं। तुम अपनी बेटी को मेरे साथ भेज दो"। उसे लाकर अपने पिता को सौंप दिया था। कोहलीजी के 'महासमर' में यह वृत्त इस रूप में अंकित है मृगया से लौट पिता शांतनु की अवस्था को देख देवनत चिंतित हो जाता है, देवव्रत विस्मय करता है कि वह स्त्री कौन रही होगी जिस ने पिता की धमनियों में वर्षो से सोये ज्वार को फिर से जगा दिया है। मंत्री से देवव्रत को सारा समाचार मिल जाता है कि यमुना के तट पर दासराज नामक केवट प्रमुख का स्थान है और उस की पुत्री को देख कर राजा ने उसके पिता के सम्मुख पाणिग्रहण का प्रस्ताव रखा था। केवट प्रमुख ने एक शर्त रखी शर्त थी नयी रानी के पुत्र को राज्याधिकार और पहले पुत्र का अधिकारच्युत होना ।.....

देवव्रत सारथी को लेकर निषाद के घर जाता है और अपने पिता चक्रवर्ती शांतनु की रानी के रूप में उसकी पुत्री सत्यवती की याचना करता है। केवट में दुनियादार भी बहुत है। उसे एक पिता के रूप में अपनी बेटी के भविष्य की सहज चिंता भी है और साथ ही अपनी बेटी की भावी संतानों के लिए कुरुसाम्राज्य के वैभव व अधिकार का लोभ भी। वह कहता है कि शांतनु किसी रूप में उसकी बेटी के लिए उपयुक्त वर नहीं है। कारण कि इस विवाह के द्वारा राजा की भार्या बनने पर उसकी दरिद्रावस्था तो दूर हो सकती है, मगर उसका बेटा यमुना में नाव चलानेवाले केवट की जगह हस्तिनापुर का राजा तो नहीं बननेवाला है। हस्तिनापुर का युवराज तो

उसके सम्मुख है जो योद्धा, शक्तिशाली और लोकप्रिय सब कुछ हैं और अपने पिता के पश्चात् राज्य, धन संपत्ति, कुल, गोत्र सबका स्वामी वहीं होंगे। ऐसे में उस की पुत्री और संतानों के लिए हस्तिनापुर के राजमहलों में जाकर दासी और दासी पुत्रों का जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा केवट बने रहना ही श्रेयस्कार है।

देवव्रत ने इस उत्तर पर सत्यवती के पुत्र दासी पुत्र नहीं होंगे दाशराज स्पष्ट शब्दों में अपनी शर्त इस रूप में सामने रखता है- 'मेरी लड़की की संतान राजा की संतान हो। सत्यवती का ज्येष्ठ पुत्र हस्तिनापुर का युवराज हो। आप युवराज नहीं रहेंगे। पिता के पश्चात् आप को राज्य नहीं मिलेगा। आप एक साधारण जन हो जायेंगे। कुरुओं का विराट साम्राज्य आप का नहीं होगा।

देवव्रत ने इन शर्तों को स्वीकार करने पर आगे वह कहता है कि वे तो सत्यवती के पुत्र के लिए अपना राज्याधिकार छोड़ रहे हैं और वह उनकी बात का विश्वास कर सकता है, अगर कल जब उनका विवाह होगा, उनके बच्चे होंगे, वे बड़े होंगे और तब संभव है कि वे उनसे सहमत न होकर अपने लिए अधिकार की माँग कर बैठें। दाशराज की इसी आशंका और संशय के जवाब में देवव्रत यह प्रतिज्ञा कर बैठता है। दाशराज मैं आप को वचन देता हूँ कि मेरे पुत्र, पौत्र, प्रपोत्र कोई भी कभी भी आप से, मुझ से और आप की पुत्री की संतान से अपने पैतृक राज्याधिकार की माँग नहीं करेगा मैं सूर्य, पृथ्वी और पवन को साक्षी बनाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आजीवन अविवाहित रहूँगा।

उपर्युक्त प्रसंगों के तुलनात्मक अनुशीलन से स्पष्ट हो जाता है कि पर्व और महासमर के लेखकों ने प्रायः मूल कथा का अनुसरण ही किया है, कोई मौलिक परिवर्तन घटित नहीं कराया है। दो तीन गौण बातों में ही यत्किंचित अंतर है। थोड़ा बहुत उल्लेखनीय फरक केवल इस बात में हैं कि मूल महाभारतीय कथा में पुत्र गांगेय के प्रश्न के उत्तर में स्वयं शांतनु अपने मन की पुनर्विवाह प्रकट कर देते हैं, यद्यपि उस कथन में ऋजुता और निश्चलता का एकांत अभाव है।

जब कि 'पर्व' और 'महासमर में इस मुद्दे पर शांतनु को मौन ही दिखलाया गया है- अपने पुत्र की आत्मीयतापूर्ण जिज्ञासा का कोई उत्तर शांतनु उसे नहीं देते। हाँ इस कारण शांतनु के चरित्र निर्माण में अवश्य अंतर आ गया है। मूल महाभारत का शांतनु जहाँ अपनी इच्छा में अधिक अशोभन और उसकी अभिव्यक्ति में किसी सीमा तक कपटयुक्त दीखता है, वहीं, पर्व और महासमर के लेखकों ने शांतनु के इस चरित्र दोष का परिहार कर दिया है, यही नहीं, पर्व के लेखक ने सारथी के मुँह से यह तब कहलाया है कि गांगेय पर शांतनु का अत्यधिक स्नेह रहा है कि इसी कारण उन्होंने पिता और माता दोनों बनकर गांगेय को पाला है और इसीलिए वे दाशराज को, सत्यवती के पुत्र को राजा बनाने का वर नहीं दे सके हैं।

दूसरा यत्किंचित् फरक इस बात में भी है कि मूल में सत्यवती को क्षत्रिय कन्या बताया गया है और महासमर के लेखक ने इसी बात का अनुसरण क्रिया है वहाँ 'पर्व' के लेखक ने उसे क्षत्रिय कन्या की जगह

आर्योत्तर और वह भी मछुवारों की कन्या माना है। उसे उन्होने रंग के अनुरूप नाम भी काली दिया है। 'पर्व' के लेखक ने आगे भी अपनी कथा का विकास इसी आधार पर किया है, मगर संप्रति हमारेलिए यहाँ विषयांतर होगा।

तीसरा और अंतिम गौण परिवर्तन इस बात में द्रष्टव्य है कि जहाँ 'महाभारत' का शांतनु अपने मन का प्रिय करने के एवज में देवव्रत को स्वच्छंद मरण कर वरदान देता है, वहाँ 'पर्व' और 'महासमर' के लेखकों ने ऐसे किसी वरदान का नियोजन नहीं किया है।

संदर्भ सूची:

१. महाभारत. आदिपर्वपृ. ३०८-३१२

२. कृष्णावतार बंसी की धुन. २५

३. पर्व ४०२ से ४०५ तक

४. महासमर – बंधन – २५,३८

****